बड़े लोगों का बचपन - **येवगेनी येवतुशेंको** - दबंग रूसी कवि

उसे उम्मीद थी कि स्टालिन उसे देखेगा.

येवगेनी येवतुशेंको को सभी चीज़ों में दो चीजें सबसे पसंद थीं. उसे पढ़ना पसंद था और उसे डांस करना बहुत पसंद था. वो लोक नृत्य में इतना अच्छा था कि जब वो काफी छोटा था तब भी उसे शादियों में नृत्य करने के लिए आमंत्रित किया जाता था.

येवगेनी के पिता ने उसे बहुत कम उम्र में पढ़ना और विशेष रूप से कविताओं से प्रेम करना सिखाया था. वे अपने पसंदीदा कविताओं का पाठ करते हुए एक-साथ मास्को की सड़कों पर घूमते थे. कभी-कभी, सार्वजनिक छुट्टियों पर, सड़कों पर हंसी, जयकार लगाने वालों की भीड़ होती थी, जो अपने नेता स्टालिन को देखने के लिए इंतजार कर रहे होते थे.

रूसी लोग उन दिनों स्टालिन से बहुत प्यार करते थे और उन्हें "छोटा पिता" कहते थे. लोग विश्वास नहीं करते थे कि स्टालिन को उन हजारों लोगों के बारे में कुछ नहीं पता था जिन्हें 1917 में क्रांति के बाद मार डाला गया था. येवगेनी के दो दादाओं को झूठे आरोपों पर मार डाला गया था, हालांकि उन्होंने रूस के उत्थान के लिए जीवन भर कड़ी मेहनत की थी.

उन अशांत दिनों में एक आदमी को एक दिन हीरो और अगले दिन देशद्रोही कहा जा सकता था. येवगेनी खुद अपने पिता के कंधे पर बैठकर लाल झंडा लहराता था, इस उम्मीद में कि शायद स्टालिन उन्हें उस बड़ी भीड़ में देखेगा.

येवगेनी अपने माता-पिता दोनों से बहुत प्यार करता था, लेकिन उसका सिर हमेशा एक किताब में डूबा रहता था कि उसे यह एहसास ही नहीं हुआ कि उसके माँ-बाप एक साथ खुश नहीं थे. अंत में उनका तलाक हो गया और उसके पिता घर छोड़कर चले गए.

1941 में येवगेनी को, हजारों अन्य मास्को के बच्चों के साथ, साइबेरिया ले जाया गया, क्योंकि जर्मनी ने रूस पर आक्रमण कर किया था. ट्रेन की यात्रा में लगभग एक महीने का समय लगा, और पूरे रास्ते में येवगेनी ने महिलाओं और बच्चों को रोते हुए देखा क्योंकि उनके आदमी लोग युद्ध में लड़ने जा रहे थे. वो केवल आठ वर्ष का था लेकिन वो इतना समझ गया था कि बहुत से युवक युद्ध से ज़िंदा वापस नहीं लौटेंगे. उसे अचानक पता चला कि वास्तविक जीवन में भी वैसी ही ट्रेजेडी थी, जैसी किताबों में थी.

युद्ध के प्रयास में मदद करने के लिए लोगों ने वो सब किया जो वो कर सकते थे. येवगेनी ने फसल उगाने में मदद की, दवा बनाने के लिए जड़ी-बूटियाँ इकट्ठी कीं और यहाँ तक कि जब वो स्कूल में नहीं होता तब वो एक आरा मिल में काम करता था. उसकी माँ, जो बहुत सुन्दर गाती थीं, ने अग्रिम पंक्ति में सैनिकों का मनोरंजन करने के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी.

जब माँ दूर गईं तो येवगेनी अपनी दादी के साथ रहा, और उसने लिखना शुरू किया. युद्ध के कारण लिखने के लिए किसी भी प्रकार का साफ कागज मिलना असंभव था, इसलिए उन्होंने अपनी दादी की किताबों की पंक्तियों के बीच लिखा.

येवगेनी ने गुंडे को मारपीट में हराया.

जब परस्थिति फिर से सुरक्षित हुई तब येवगेनी की मां उसे वापस मास्को ले गयीं और उसे अपने फ्लैट में अकेले रहने के लिए छोड़ दिया, और वो खुद वापस सैनिकों के पास चली गईं. उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होने के कारण वो अपना अधिकांश समय स्कूल के बाहर गलियों में बिताता था. उसकी अपनी गली के नीचे रेड नाम का एक लड़का रहता था जो सभी छोटे लड़कों को तंग करता था और अक्सर उनसे पैसे वसूलता था.

एक दिन येवगेनी ने उसका मजाक उड़ाते हुए एक कविता लिखी, और फिर रेड ने येवगेनी के सिर पर इतनी जोर से वार किया कि उसने कई दिन बिस्तर पर बिताए. जब वो ठीक हुआ, तो उसने ठान लिया कि अब रेड उसे और तंग नहीं कर पाएगा. उसने अपना राशन कार्ड गिरवी रखकर मार्शल आर्ट्स - जू-जित्सु पर एक किताब खरीदी और फिर तीन सप्ताह तक अन्य लड़कों के साथ गुप्त रूप से लड़ने का अभ्यास किया. फिर उन्होंने रेड को लड़ाई के लिए चुनौती दी और उसे जमकर पीटा.

युद्ध समाप्त होने पर येवगेनी 12 वर्ष का था, और उसकी माँ वापस आई तो उसे यह पता चला कि येवगेनी एक गुंडा बन गया था. वो स्कूल में बुरी तरह फेल हुआ, धूम्रपान किया, गालियां दीं और यहां तक कि वो अपराधियों की संगत में पड़ गया.

लेकिन साथ में वो उन सभी चीजों के बारे में कवितायें भी लिख रहा था जिन्हें वो रोज़ देखता था. एक बार उसने अपनी कविताओं की एक पूरी किताब एक युवा पत्रिका के संपादक को भेजी और संपादक ने "मिस्टर येवतुशेंको" से उनसे मिलने को बुलाया. जब संपादक ने एक स्कूली बच्चे को अपने कार्यालय में आते देखा, तो उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ क्योंकि कविताएँ इतनी हिंसा और दुख से भरी थीं.

उन्होंने येवगेनी की कविताओं को तो नहीं छापा, लेकिन उन्होंने येवगेनी से बड़े प्रेम से बात की और उसे लेखन के बारे में सलाह दी. उसकी माँ नहीं चाहती थीं कि उनका लड़का कवि बने क्योंकि वो जानती थीं कि कई कवियों को पहले ही जेल शिविरों में भेज दिया गया था, या यहाँ फिर उन्हें मार डाला गया था क्योंकि उन्होंने अपनी कविताओं में सरकार की तारीफ़ नहीं की थी.

जैसे ही येवगेनी ने अपनी कविताएँ लिखीं, माँ ने अपने बेटे की नोटबुक्स फाड़ डालीं.

जब येवगेनी पंद्रह वर्ष के थे, तब किसी ने उनके स्कूल में कक्षा के रिकॉर्ड चुरा लिए और फिर उसके लिए येवगेनी को दोषी ठहराया गया. असल में वो दोषी नहीं था, लेकिन उसे बड़ी खुशी हुई जब उसे स्कूल से निष्कासित कर दिया गया. उसकी माँ इस बात से इतनी नाराज़ हुई कि येवगेनी अपने पिता के पास भाग गया. उसने एक ट्राम की छत पर कज़ाकिस्तान (1,500 मील) की यात्रा की.

येवगेनी ने भूवैज्ञानिक सर्वेक्षणों में अपने पिता की मदद की और देश भर में घूमने का आनंद लिया. जब गर्मी खत्म हुई, तो वो वापस मास्को लौट आया और फिर उसने अपनी माँ के साथ झगड़ा किया. लेकिन उसने कविता लिखना बंद नहीं किया. उसकी पहली कविता (फुटबॉल के बारे में) उसी साल एक अखबार में छपी.

अब येवतुशेंको रूस के प्रमुख युवा कवियों में से एक हैं. मॉस्को की सड़कों पर उनके कठिन प्रशिक्षण ने उसे अच्छी स्थिति में खड़ा किया है.

हालाँकि उसकी कवितायें उसे अक्सर कम्युनिस्ट पार्टी के साथ परेशानी में डालती हैं, फिर भी उसमें सच लिखने का साहस है.